वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

रविवार, पौष शुक्ल पक्ष, चतुर्थी, कलियुग वर्ष ५१२२ (१७ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं
१८ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग
कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-18012021

देव स्तुति

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवायः ॥

अर्थ : हे यक्षस्वरूप, जटाधारी शिव, आप आदि, मध्य एवं अन्तरहित सनातन हैं। हे दिव्य अम्बरधारी शिव, आपके 'शि' अक्षरद्वारा विदित स्वरूपको नमन है।

शास्त्रवचन

विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम् ।
तादृंकनाम सहस्राणि रामनाम समं मतम् ॥

अर्थ : पद्मपुराणके अनुसार नाम महिमा : श्रीविष्णुका एक-एक नाम ही सब वेदोंसे अधिक माना गया है । वैसे ही एक सहस्र नामोंके समान अकेला श्रीराम नाम माना गया है ।

****

जपतः सर्वमन्त्रांश्च सर्ववेदांश्च पार्वति ।
तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते ॥

अर्थ : पद्मपुराणमें शिवजी पार्वतीजीसे कहते हैं, हे पार्वती ! जो सम्पूर्ण मन्त्रों व समस्त वेदोंका जप करता है, उसकी अपेक्षा कोटिगुना पुण्य केवल रामनामसे उपलब्ध होता है ।

धर्मधारा

१. 'वचनं किम् दरिद्रता'वाले जन्म-हिन्दुओंसे सदैव रहें सावधान !

अनेक अकर्मण्य हिन्दू कुछ करते तो नहीं; परन्तु टीका करना, चूक निकालना, जो कुछ अच्छा कर रहें हों, उन्हें अपनी तीक्ष्णसे शब्दोंसे हतोत्साहित करना, उनका मूल स्वभाव होता है और वे इसीमें अपना बडप्पन समझते हैं । ऐसे 'वचनं किम् दरिद्रता'वाले हिन्दुओंसे सदैव सावधान रहें ! अकर्मण्य हिन्दुओंको जो राष्ट्र एवं धर्म निमित्त कुछ भी योगदान नहीं देते हैं और न ही साधना करते हैं, उन्हें किसीपर टीका करनेका अधिकार नहीं होता, इस तथ्यका ऐसे हिन्दू सदैव ध्यान रखें !

२. हिन्दू राष्ट्र आवश्यक क्यों ? (भाग- ८)

आए दिन इस देशमें तमोगुणी, भ्रष्ट, पापी, निधर्मी, धर्मद्रोही एवं राष्ट्रद्रोही वृत्तिके नेताओंको, उनके अनुयायी, राम, कृष्ण, दुर्गा, शिव इत्यादिके रूपसे दिखाकर उन्हें तारणहार बताते हैं; किन्तु आपने कभी 'अल्लाह' या 'ईसा'के रूपमें ऐसा चित्रण कहीं नहीं देखा होगा ! वस्तुतः यदि ये राजनेता, राम और कृष्णके चरणोंके धूल बराबर भी यदि होते तो इन्हें मात्र पांच वर्ष राज्य करने हेतु होनेवाले चुनाव जीतने हेतु इतने छल-प्रपंच और मिथ्याचारका आधार नहीं लेना पडता और अपने लिए मतोंकी याचना हेतु घर-घर न जाना पडता । उनके कार्यसे उन्हें मत स्वतः ही मिल जाता । ऐसी कौनसी प्रजा होगी, जो कुशल शासक नहीं चाहेगी ?; किन्तु हमारे नेताओंके कार्य नहीं बोलते हैं; इसलिए उन्हें बोलना पडता है । भिन्न प्रकारके धर्मद्रोही आधार लेने पडते है । हमारे देवी-देवताओंका घोर अनादर रोकने हेतु धर्म अधिष्ठित राष्ट्रीय प्रणालीकी अत्यधिक आवश्यकता है; जबतक धर्मको राज्याश्रय नहीं मिलता, उसकी विडम्बना पापी लोग करते ही रहते हैं ।

****

३. शंका समाधान

प्रश्न : एक व्यक्तिने पूछा है कि मेरे एक सम्बन्धीको सूक्ष्म समझमें आता है; किन्तु उनसे बात करनेसे ही ऐसा लगता है कि उनमें अहं बहुत अधिक है और उन्हें अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट भी है और वे अधिक साधना भी नहीं करते हैं तो भी वे सूक्ष्म सम्बन्धी जो बातें बताते हैं, वह सच होती है, ऐसा कैसे होता है ?

उत्तर : सूक्ष्मके विषयमें जाननेकी दो पद्धतियां हैं, एक तो आप योग्य साधना करते जाएं, जैसे-जैसे आपका मन एवं बुद्धि,

विश्वमन और विश्वबुद्धि अर्थात ईश्वरसे एकरूप होता जाएगा, आपका सूक्ष्म ज्ञान बढता जाएगा एवं परिष्कृत होता जाएगा; किन्तु उसकी पुष्टि आपको किसी सन्तसे तबतक कराना चाहिए जबतक वे न कह दें कि अब आपको पूछनेकी आवश्यकता नहीं है । किन्तु यहां साधना किसी योग्य गुरुके मार्गदर्शनमें होना चाहिए या वह व्यक्ति किसी उच्च कोटिके देवी या देवताका उपासक हों या ज्ञानमार्गी या ध्यानमार्गी हों तो भी सूक्ष्म सम्बन्धी ज्ञान होना सम्भव है; किन्तु उनका आध्यात्मिक स्तर ६१% से अधिक होना चाहिए और उन्हें आध्यात्मिक कष्ट नहीं होना चाहिए ।

दूसरी पद्धतिके अनुसार सूक्ष्मका ज्ञान उन्हें भी होता है, जिन्हें अनिष्ट शक्तियोंका अधिक कष्ट होता है, ऐसे व्यक्तिका अहं अधिक होता है या उसमें दोष अधिक होते हैं या घरमें पितृदोषका प्रमाण अधिक होता है तो भी उस घरके सदस्यको अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट हो जाता है । ऐसे व्यक्तिकी मनोदेह (मन) और कारणदेह (बुद्धि) अनिष्ट शक्तियोंसे आवेशित होती है; इसलिए अनिष्ट शक्ति उनके मन एवं बुद्धिपर नियन्त्रण कर लेती है और मृत्यु उपरान्त जैसे ही स्थूल देहकी मर्यादा समाप्त हो जाती है तो लिंगदेहको सूक्ष्म जगत, उसके आध्यात्मिक स्तर अनुरूप समझमें आने लगता है । यह मैं कैसे बता रही हूं; क्योंकि मैंने देखा है कि 'उपासना'के कुछ साधकोंके सगे-सम्बन्धी जो ठीकसे साधना नहीं करते थे या कुछ तो विरोधी भी थे; किन्तु मृत्यु उपरान्त वे गति हेतु उपासनाके आश्रममें तत्काल आ गए । मैंने इसकी अनेक बार अनुभूति ली है, इससे मुझे ज्ञात हुआ कि मृत्यु उपरान्त उन्हें बहुतसी बातें त्वरित समझमें आने लगती हैं, जो मृत्युसे पूर्व उन्हें व्यर्थ लगती थीं । यह मैं आपको इसलिए बता रही हूं कि आप समझ

सकें कि जिनका उच्च आध्यात्मिक स्तर न हों, जो स्वयं साधना नहीं करते हों या जिनके घरमें कष्ट हो या जो स्वयं कष्टमें हों या जिनका अहं अधिक हो उन्हें सूक्ष्म इसलिए समझमें आता है; क्योंकि उनकी देह भूतावेषित होती है। आज देशमें आप अनेक हिन्दुओंको देख ही रहे हैं, वे खुलकर राष्ट्रद्रोही या धर्मद्रोही समान बातें या कृत्य करते हैं, यह भी उनकी सूक्ष्म देह, अनिष्ट शक्तियोंमें नियन्त्रणमें होनेके कारण होता है।

आध्यात्मिक शोधके समय एक और बात ज्ञात हुई कि यदि किसीको बाल्यकालसे ही अर्थात गर्भसे अनिष्ट शक्तियोंका तीव्र कष्ट हो तो उसे भी सूक्ष्म समझमें आता है। हमारी एक साधिका हैं, उनकी माताजी किसी और हिन्दू पन्थसे हैं, जो पितरोंके लिए विशेष कुछ करते नहीं हैं, उनके माताजीके कुटुम्बमें अत्यधिक पितृदोष है; इसलिए उन्हें भी बाल्यकालसे ही अत्यधिक कष्ट रहा है, जिसे वे सामान्य कष्ट ही समझती थीं और अपने कष्टोंके निवारण हेतु अपनी बुद्धिसे कुछ न कुछ उपचार या उपाय भी करती रहती थीं; किन्तु जब वे उपासनाके मार्गदर्शनमें योग्य साधना करने लगीं तो उन्हें सब समझमें आया कि उनके साथ सब क्यों हो रहा था ? उनका आध्यात्मिक स्तर ४०% था; किन्तु उन्हें सूक्ष्म बहुत ही सरलतासे समझमें आता है। वस्तुत: उनका मन एवं बुद्धि अनिष्ट शक्तियोंसे आवेशित होनेके कारण वह विचार उनसे आते थे। ऐसे साधकोंको योग्य साधना करते समय बहुत अधिक कष्ट होता है या अडचनें आती हैं या वे अनेक बार वे प्रकट हो जाते हैं या उन्हें अपने गुरु या आराध्यके प्रति विकल्प आता है और वे अनेक बार साधना छोड भी देते हैं। कुछ साधकोंको जब अनिष्ट शक्तियोंके कारण कष्ट होने

लगता है और उनकी पूर्व जन्मकी साधना प्रगल्भ हो अर्थात उनका आध्यात्मिक स्तर ६१% से अधिक हो तो अनिष्ट शक्तिके आक्रमण होनेपर उनकी सूक्ष्म इन्द्रियां एवं कर्मेन्द्रियां जाग्रत होकर अनिष्ट शक्तियोंका प्रतिकार करने लगती हैं और इसी क्रममें अकस्मात उनकी सूक्ष्म इन्द्रियां जाग्रत हो जाती हैं।

इसलिए एक सरलसा शास्त्र जान लें कि यदि कोई व्यक्ति किसी योग्य गुरुके संरक्षणमें साधना नहीं करता है और उसका आध्यात्मिक स्तर ६१% से कम है तो उसे जो सूक्ष्म समझमें आता है वह अनिष्ट शक्तियोंके कारण हो सकता है और उनका सूक्ष्म ज्ञान पूर्ण रूपसे परिष्कृत नहीं होता है अर्थात वह पूर्ण सत्य नहीं होता है। अनेक बार मैंने देखा है कि अनिष्ट शक्तियां किसी व्यक्ति या साधकको आवेशितकर उनके माध्यमसे दूसरे व्यक्तिके विषयमें जान बूझकर कुछ बातें सच बताती हैं, जिससे वह व्यक्ति जो बता रहा है, उससे उसका अहं बढ जाए और वह उसके देहमें अधिक कालतक रह सके एवं सामनेवाला व्यक्ति जिसके विषयमें वह बता रहा है, वह उसके प्रभावमें आकर उसका सम्मान करने लगे। ऐसी अनिष्ट शक्तियोंको लोकैष्णा होती है अर्थात लोग उनकी स्तुति करे, यह इच्छा होती है और वे मृत्यु उपरान्त भी किसी व्यक्तिकी देहको आवेशितकर उसे पूर्ण करती हैं। अर्थात जैसे किसी लिंगदेहको मद्यका व्यसन हो और जब वह मृत्युको प्राप्त हो जाता है और वैदिक सनातन धर्म अनुसार उसका श्राद्ध इत्यादि न हो और वह साधक भी न हो तो उसे गति नहीं मिलती है तो वह किसी और व्यक्तिकी देहको आवेशितकर अपनी इच्छाकी तृप्ति करता है। उसी प्रकार 'कोई स्तुति करे', यदि किसीमें यह विचार बहुत प्रगल्भ हो और उसे गति न मिली हो तो वह भी किस

व्यक्तिकी देहको आवेशित कर लेता है । मैं एक बार 'फेसबुक'पर एक 'रियलिटी शो'में एक बच्चीका नृत्य देख रही थी; उसका नृत्य बहुत ही अच्छा था; किन्तु उस बच्चीको तीव्र आध्यात्मिक कष्ट था और स्थूल नेत्रोंसे लग रहा था कि वह बच्ची नृत्य कर रही है; किन्तु खरे अर्थोंमें वह उससे कोई और करवा रहा था । वहां उपस्थित निर्णायक दल उस बच्चीके नृत्यसे आश्चर्यचकित था और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा था; क्योंकि उन्हें लग रहा था कि वह बहुत ही प्रतिभाशाली है और जो कर रही है, सचमें असम्भव जैसा ही था । यह है सूक्ष्म जगत ! इसे समझने हेतु योग्य गुरुके शरणमें योग्य साधना करनी पडती है, तभी परिष्कृत ज्ञान मिलता है । इसी ज्ञानको देनेके लिए हमारे यहां गुरुकुल पद्धति थी, जिसमें शिष्य १२ वर्ष गुरुकी सेवा करता था, भिक्षा मांगकर आश्रमके लिए लाता था, गुरुकी आज्ञाका पालन करता था और तब गुरु उसकी पात्रता देखकर, उन्हें यह ज्ञान देते थे । आजकल लोग दूरभाषपर और घर बैठे सब पाना चाहते हैं जो असम्भव है ।

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसङ्ग

वशीकरणकी जडी-बूटी

बहुत समय पहलेकी बात है, एक वृद्ध संन्यासी हिमालयकी पहाडियोंमें कहीं रहता था । वह बडा ज्ञानी था और उसकी बुद्धिमत्ताकी प्रसिद्धि दूर-दूरतक फैली थी । एक दिवस एक स्त्री उसके पास पहुंची और अपना दुखडा रोने लगी, "बाबा ! मेरा पति मुझसे बहुत प्रेम करता था; परन्तु वह जबसे युद्धसे लौटा है, ठीकसे बाततक नहीं करता ।"

"युद्ध लोगोंके साथ ऐसा ही करता है ।" संन्यासी बोला ।

“लोग कहते हैं कि आपकी दी हुई जडी-बूटी व्यक्तिमें पुनः प्रेम उत्पन्न कर सकती है, कृपया आप मुझे वो जडी-बूटी दे दीजिए !” महिलाने विनती की।

संन्यासीने कुछ सोचा और बोला, “देवी, मैं तुम्हे वह जडी-बूटी अवश्य दे देता; परन्तु उसे बनानेके लिए एक ऐसी वस्तु चाहिए, जो मेरे पास नहीं है।”

"आपको क्या चाहिए ? मुझे बताइए मैं लेकर आउंगी।” महिला बोली।

“मुझे बाघकी मूंछका एक बाल चाहिए।” संन्यासी बोला।

अगले ही दिन महिला बाघके शोधमें जंगलमें निकल पडी। बहुत ढूंढनेके पश्चात उसे नदीके किनारे एक बाघ दिखा, बाघ उसे देखते ही दहाडा । महिला भयभीत हो गई और भयभीत होकर अपने घर चली गई।

अगले कुछ दिवसोंतक यही हुआ। महिला साहस करके उस बाघके पास पहुंचती और भयभीत होकर लौटकर चली जाती । माह बीतते-बीतते बाघको महिलाकी उपस्थितिका अभ्यास हो गया और अब वह उसे देखकर सामान्य ही रहता। अब तो महिला बाघके लिए मांस भी लाने लगी और बाघ बडे चावसे उसे खाता। उनकी मित्रता बढने लगी और अब महिला बाघको थपथपाने भी लगी और देखते-देखते वह दिन भी आ गया, जब उसने साहस दिखाते हुए बाघकी मूंछका एक बाल भी निकाल लिया।

अब क्या था ? वह बिना विलम्ब किए संन्यासीके पास पहुंची और बोली, “मैं बाल ले आई, बाबा।”

“बहुत अच्छे।” और ऐसा कहते हुए संन्यासीने बालको जलती हुई अग्निमें फेंक दिया। “अरे ये क्या बाबा ? आप नहीं

जानते, इस बालको लानेके लिए मैंने कितने प्रयत्न किए और आपने इसे जला दिया ! अब मेरी जडी-बूटी कैसे बनेगी ?"

संन्यासीने मुस्कराते हुए कहा, "जिस धैर्य, प्रेम व व्यवहारसे तुमने एक हिंसक पशुको अपने वशमें कर लिया है, उसके पश्चात किसी जडी-बूटीकी आवश्यकता नहीं है । इसी धैर्य, प्रेम व स्नेहपूर्ण व्यवहारसे तुम किसीको भी वशमें कर सकती हो ।"

घरका वैद्य

जायफल (भाग-१)

जायफल रुचि उत्पन्न करनेवाला, जठराग्नि प्रदीपक तथा कफ और वायुका शमन करनेवाला है । जायफल जितना वयस्कोंके लिए हितकर है, उतना ही बालकोंके लिए भी हितकर है । यह हृदयरोग, 'दस्त', खांसी, वमन, शीतप्रकोप आदिमें लाभदायक है ।

जायफल मूत्र लानेवाला, दुग्धवर्धक, नींद लानेवाला, पाचक व पौष्टिक होते हैं । भारमें हलका, शुष्क, कनिष्ठ और बडा, चिकना व भारी जायफल श्रेष्ठ माना जाता है ।

जायफलका वृक्ष बडा होता है । इसकी ८० प्रजातियां मानी जाती हैं । भारत व मालद्वीपमें कुल ३० प्रजातियां पाई जाती हैं । जायफलका वानस्पतिक नाम 'मायरिस्टिका फरेंगरेंस' संस्कृतमें 'जातीफल' अंग्रेजीमें 'नटमग' कहा जाता है । इससे दो 'मसाले' प्राप्त होते हैं : जायफल तथा जावित्री । यह चीन, ताइवान, मलेशिया, केरल, श्रीलंका, और दक्षिणी अमेरिकामें पाया जाता है ।

लेनेकी मात्रा : चूर्ण लगभग आधा ग्रामसे एक ग्राम तथा तेल १ से ३ बूंद ।

बिलालने 'आश्रम' 'वेब सीरीज' देखकर जंगलमें की युवतीकी हत्या

झारखण्डकी राजधानी रांची स्थित ओरमांझीसे कुछ ही दिन पहले एक युवतीका सिर कटा शव मिला था। इस युवतीके हत्यारे आरोपी शेख बेलालने कहा है कि उसे विवादके कारण चर्चामें आई 'वेब सीरीज' 'आश्रम'ने ऐसा करनेकी प्रेरणा दी और इसे देखकर ही उसने यह क्रूरता की।

रविवार, १० जनवरीको जिराबार जंगलसे एक युवतीका शव मिला था, जो नग्न अवस्थामें था। सिर न मिलनेके कारण मृतकाका अभिज्ञान (पहचान) नहीं हो सका था। पुलिसने आरोपी बिलाल खानकी खोज की और उसे पकडनेमें सफल रही।

शव मिलनेके पश्चात रांचीके पुलिस अधीक्षक नौशाद आलमने बताया था कि उन्हें निर्वस्त्र अवस्थामें महिलाका शव मिला और युवतीका कटा हुआ सिर उसके पहले पति बिलाल खानके खेतसे मिला। युवतीका सिर बिलाल खानके खेतमें दबाया गया था, जिसे पुलिस अधिकारियोंने खोदकर निकलवाया।

इससे स्पष्ट है कि फूहडता, हत्या, अश्लीलता परोसनेवाले चलचित्र समाजका दर्पण नहीं होते हैं, वरन समाजमें एक धारणा निर्माण करते हैं। बिलाल एक तो चलचित्रसे प्रेरित था और दूसरा अपनी आतङ्की मानसिकतासे, जिसके कारण उसने ऐसा दुस्साहस किया। आज इस समाजको इन दोनोंसे ही मुक्तिकी आवश्यकता है।

किसान आन्दोलनमें बालकने मोदीको फांसीपर लटकानेकी कही बात

कुछ लोग किसान आन्दोलनको 'शाहीनबाग-२'की संज्ञा दे रहे हैं। इसके पीछे एक बडा कारण प्रदर्शनकारियोंद्वारा 'शाहीनबाग मॉडल'को अपनाना भी है। हमने देखा कि पिछले कुछ समयसे देशके प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीको अपशब्द कहना चलन बन गया । उदाहरणके लिए बच्चोंके मुंहसे 'मोदी मुर्दाबाद' बुलवाना, बच्चोंसे कहलवाना कि वो मोदीको गोली मारना चाहते हैं या मोदीको फांसी लगाना चाहते हैं। ऐसा ही एक 'वीडियो' 'सोशल मीडिया'पर प्रसारित हुआ है, जिसमें एक पगडी पहने हुए बच्चा यह कहते हुए देखा जा सकता है कि वो बडा होकर मोदीको फांसी लगाना चाहता है और जब उससे पूछा गया कि उसने ये कहांसे सीखा तो बच्चा 'एनडीटीवी' और 'बीबीसी' जैसे वामपन्थी 'मीडिया' संस्थानोंका नाम लेता है !

इसमें बच्चा कहता है, "मुझे ये भी लगता है कि ये जो मोदी है न, ये सारे पैसे लेकर भाग जाएगा", और भी कई अनर्गल बातें इसने की।

जिहादियोंकी सोच, वामपन्थी दलोंकी विषैली भडकाऊ राजनीतिने बच्चोंके भीतर भी विष भर दिया है। उसका परिणाम बहुत ही भयावह होगा; क्योंकि यह बालक इस मानसिकताके कारण आतङ्की या हत्यारा अवश्य बन जाएगा ! यह भारतके भविष्यको सर्वनाश करनेका प्रयास है । शासनको अपना कर्तव्य समझते हुए ऐसे प्रकरणोंपर कठोर कार्यवाही करनी चाहिए।

(१६.०१.२०२१)

महाराष्ट्रमें जिहादीद्वारा अपनी ही बच्चियोंका बलात्कार करनेपर मांने करवाई प्राथमिकी प्रविष्ट

महाराष्ट्रके पुणेके कोंढावामें एक जिहादीने अपनी ही दो जुडवा बेटियोंका बलात्कार किया और यह दुष्कर्म पिछले ४ वर्षोंसे हो रहा था ! इस प्रकरणकी जानकारी होनेपर लडकियोंकी 'अम्मी'ने इस सम्बन्धमें पुलिसमें प्रकरण प्रविष्ट करवाया।

महिलाके अनुसार, उसका पति पिछले चार वर्षोंसे उसकी बेटियोंका बलात्कार कर रहा था। वर्ष २०१६ में उनकी एक बेटीने पेटमें वेदना (दर्द) होनेकी बात कही। चिकित्सकने 'सोनोग्राफी' करानेको कहा; किन्तु 'रिपोर्ट' आते ही आरोपी पिताने 'रिपोर्ट' छीनकर गैसपर रखकर जला दी। इस सम्बन्धमें अपने पतिसे बात करनेपर उसे मारनेकी धमकी मिली। महिलाके अनुसार, इन्हीं सब कारणोंसे वह अपने पतिसे जून २०२० से पृथक रहती है।

उल्लेखनीय है कि पहले भी ऐसा प्रकरण बिहारके बेगूसरायसे भी आया था। मोहम्मद मोहफिजके विरुद्ध उसकी ही बेटियोंने परिवाद (शिकायत) करवाया था। बेटियोंने एक 'वीडियो' भी दिखाया था, जिसमें वह अपनी बेटियोंसे 'वीडियो कॉल'पर गुप्ताङ्ग दिखानेको कह रहा था। 'वीडियो'में उसे 'एक बार दिखा दे बस', ऐसा कहते सुना गया था। बेटियोंके अनुसार, उसने २-३ बार बलात्कार भी किया था।

महाराष्ट्रकी यह घटना अमानवीय है; परन्तु जिहादियोंसे इसके अतिरिक्त अपेक्षा भी नहीं की जा सकती है। समाजको विकृत करनेका दायित्व इन जिहादियोंने ही लिया है। ऐसी मानसिकताके लोग समूचे समाजके

लिए घातक हैं।

****

राम मन्दिरके लिए इकबाल अंसारी भी करेंगे निधि समर्पण

बाबरी मस्जिदके पक्षकार इकबाल अंसारी भी भव्य राम मन्दिर निर्माणके लिए समर्पण निधि देंगे। श्रीराम जन्मभूमि समर्पण निधि अभियानपर इकबाल अंसारीने कहा कि बात राम मन्दिरकी है। बात धर्मकी है। लोग बढ-चढकर दान दें ! मन्दिर-मस्जिदके विवादमें लोग न आएं !

मस्जिद प्रकरणके पक्षकार रहे इकबाल अंसारीने कहा, "धर्मके कार्यमें श्रमसे अर्जित धन लगता है, तो भगवान भी प्रसन्न होते हैं और 'अल्लाहताला' भी प्रसन्न होते हैं। दान देनेमें कोई बुराई नहीं है। लोग दान दें, अब वह चाहे एक रुपया हो या एक लाख रुपए। राम मन्दिरमें सबका सहयोग होना चाहिए। दान देनेसे एक दूसरेकी कठिनाई कम होती है। ये श्रद्धाका प्रश्न है। इससे पुण्य (सवाब) मिलता।"

इस वक्तव्य और इस कथित दानके सम्बन्धमें विश्व हिन्दू परिषद और श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यासको सतर्क रहना चाहिए; क्योंकि आज एक रुपयेका प्रतीकात्मक दान देकर कल ये लोग कहेंगे, "हमारा भी दान सम्मिलित है श्रीराम मन्दिरमें", और हिन्दुओंके ४९२ वर्षोंके अनवरत संघर्ष और लाखों हिन्दुओंके प्राणोत्सर्गका क्या महत्त्व रह जाएगा ? वैसे जब श्रीरामजन्मभूमिकी मुक्तिका प्रकरण न्यायालय)में था तब यही कथित रामभक्त इकबाल अंसारी रामलला विराजमानके विरोधमें था ! तब भी आज अनेक हिन्दू इसके कूटनीतिक वक्तव्यकी स्तुति कर रहे हैं ! इसीसे समझ में आता है कि हिन्दुओंका विवेक

कितना जाग्रत है ?

****

केरलमें हिन्दू महिलाने खोला 'नॉन हलाल' भोजनालय, जिहादियोंने डाली बाधा

तुशारा नामक महिलाने केरलके एर्नाकुलममें एक 'नॉन हलाल' भोजनालय खोला है। 'ट्विटर यूजर' प्रतीश विश्वनाथने अपने खातेकेद्वारा उनकी इस नूतन पहलकी जानकारी दी है। उनके अनुसार, इस स्थानपर केवल 'गैर-हलाल' भोजन ही दिया जाता है और बाहर फलकपर (बैनरपर) यह लिखा है कि इस जलपान गृहमें 'हलाल' प्रतिबन्धित है।

तुशारा बताती हैं कि जब उन्होंने इसे आरम्भ किया तब अनेक जिहादियोंने उनके विचारका विरोध किया; परन्तु उन्होंने सभीकी बातें सुननेके पश्चात भी अपने इस विचारपर कार्य किया। आज उन्हें इस भोजनालयको खोले डेढ वर्ष व्यतीत हो गया है। वे कहती हैं, "जिहादियोंने कहा कि ये सब ठीक नहीं है। जब भी हिन्दू कोई व्यापार आरम्भ करना चाहते हैं, जिहादी हस्तक्षेप अवश्य करते हैं।"

महिला बताती हैं कि अनेक ऐसे लोग हैं, जो बिना 'हलाल' हुआ खानेको 'पसंद' करते हैं; इसलिए किसीके पास यह अधिकार नहीं है कि उन्हें 'हलाल' खाना खिलाएं ! बाहर लगे फलकके विषयमें तुशारा कहती हैं कि भोजनालयोंके बाहर 'गैर-हलाल' फलक रखनेको इतना बडा प्रकरण नहीं बनाया जाना चाहिए।

ऐसी साहसी महिलाओंपर सभी हिन्दुओंको गर्व है। सभी हिन्दुओंको इनसे शिक्षा लेनी चाहिए और ऐसे ही इस्लाम विरुद्ध निरर्थक विचारोंको धरातलपर लिना

चाहिए, जिससे जिहादियोंको अच्छेसे स्मरण रहे कि यह कोई अरब या इस्लामिक देश नहीं है, वरन वैदिक सनातन देश भारतवर्ष है।

****

देहली उपद्रवके आरोपियोंकी रक्षा करनेवाले महमूद प्राचाका वास्तविक रूप देहली पुलिसने उद्घाटित किया, प्रशान्त भूषणके आरोपोंका भी दिया उत्तर

'सुप्रीम कोर्ट'के अधिवक्ता प्रशांत भूषणद्वारा देहली पुलिसकी छापेमारीपर प्रश्न उठानेके पश्चात पुलिसने सभी प्रश्नोंका उत्तर दिया है। भूषणने यह प्रश्न 'आईएसआईएस' 'पोस्टर बॉय'के अधिवक्ता महमूद प्राचाके विरुद्धकी गई पुलिसकी 'रेड'पर खडे किए थे।

गत माह दिसम्बरमें महमूद प्राचाके कार्यालय और आवासपर देहली पुलिसके विशेष विभागद्वारा किए गए अन्वेषणके सम्बन्धमें भूषणने 'प्रेस कॉन्फ्रेंस' की थी, जिसमें भूषणने न्यायालयके आदेशपर की जा रही इस जांचको 'दुर्भावनापूर्ण' बताया था और देहली पुलिसकी मंशाके अतिरिक्त जांचपर भी कई प्रश्न उठाए थे। भूषणका आरोप था कि देहली पुलिस प्राचाके 'कम्प्यूटर'की 'हार्ड डिस्क' 'सीज' करना चाहती थी और 'वारंट'में इस कार्यवाहीकी अनुमति नहीं थी। भूषणके अनुसार, देहली पुलिसने महमूद प्राचाको केन्द्रीय गृह मन्त्री अमित शाहका नाम लेकर धमकाया भी था।

प्रशान्त भूषणके इन कथित आरोपोंका उत्तर देते हुए देहली पुलिसने कहा कि वह आदेशकी अनदेखी करके स्वयंके विरुद्ध न्यायालयकी अवमाननाके एक और प्रकरणकी भूमि सिद्ध रहे हैं।

'सर्च वारंट'पर लगाए गए आरोपोंके उत्तरमें देहली पुलिसने कहा कि यह न्यायालयके लिए प्रशान्त भूषणके मनमें घृणा है । इसका अर्थ स्पष्ट है कि वह देशकी सबसे बडे न्यायालयका वे सम्मान नहीं करते हैं।

ज्ञातव्य है कि छापेमारीके समय महमूद प्राचाने देहली पुलिसके अधिकारियोंके साथ दुर्व्यवहार किया था और जांच रोकनेका प्रयास किया था । इसके पश्चात देहली पुलिसने इसके विरुद्ध प्राथमिक प्रविष्टि कराई थी।

एक तो महमूद प्राचा जैसे आतङ्की और दूसरा उन्हें बचानेवाले प्रशांत भूषण सदृश देशद्रोही, ये दोनों ही भारतके एक शूल बनते जा रहे हैं, इन्हें निकाल फेंकना अब आवश्यक हो गया है । सभी हिन्दू शासनसे इनपर कठोर कार्यवाहीकी मांग करें !

****

भारत हिन्दू विश्वविद्यालयमें हिन्दू धर्मके परम्परागत सभी विषयोंपर छात्रोंको किया जाएगा सम्पन्न

काशीके हिन्दू विश्वविद्यालयमें पुनः छात्रोंको सभी प्राचीन विद्याएं पढाई जाएंगी । इन प्राचीन विद्याओंमें वेद, पुराण, सभी ग्रन्थ, शास्त्र तथा हिन्दू धर्म आधारित अन्य सभी पाठ्यक्रम सम्मिलित होंगे । प्राध्यापक विजय बहादुर सिंहकी अध्यक्षतामें स्थानीय तथा देश-विदेशके आचार्योंने सम्मिलित होकर इसका पाठ्यक्रम बनाया है, जिसे कला संकायने 'बोर्ड ऑफ अट्डीज'की बैठकमें सर्वसम्मतिसे पारित कर दिया गया है । इसी वर्ष २०२१ के मध्यसे ही इसके अध्ययन आरम्भ किए जाएंगे और प्रत्येक पाठ्यक्रम दो वर्ष पर्यन्त चलेगा । इसके उपरान्त स्नातककी उपाधि दी जाएगी।

'बोर्ड'ने स्पष्ट किया कि जिस प्रकार भारतमें बुद्धिष्ट अध्ययन है, जैन तथा इस्लामके लिए अध्ययन है; किन्तु हिन्दूधर्मके अध्ययनोंके लिए कोई केन्द्र नहीं है । बुद्धिजीवी इसके लिए मनमाने ढंगसे व्याख्या करते रहते हैं । उनमेंसे अधिकतर इतिहासकारोंको संस्कृतका तो तनिक भी ज्ञान भी नहीं है । वे हिन्दू धर्मग्रन्थोंकी व्याख्या विकृत रूपसे करके सभीको दिशाभ्रमित करते रहते हैं । उन देशद्रोही वामपन्थी विचारकोंका उद्देश्य मात्र यही है कि हिन्दू संस्कृतिको नष्टकर, लोगोंको भ्रष्ट किया जाए।

'प्रोफेसर' राकेश उपाध्यायने रोमिला थापर, हरबंस मुखिया इत्यादि तथाकथित इतिहासकारोंकी ओर सङ्केत करते हुए कहा कि उन्हें प्राचीन परम्पराओंका कुछ भी ज्ञान नहीं है; जैसे ऋग्वेदमें गोहत्याको लेकर कोई उल्लेख नहीं है; किन्तु वे इसीके बारेमें अनुचित लिखकर लोगोंको भ्रमित करते हुए, परम्पराओंको कलङ्कित करते रहते हैं।

'प्रोफेसर'ने बताया कि इस अध्ययनका अर्थ किसीसे वादविवाद करना नहीं है; अपितु हिन्दूधर्मके प्राचीन शास्त्रोंसे अपनी विशिष्टताको उभारना है, जिससे आगामी पीढीको इन विवादित तथाकथित इतिहासकारोंद्वारा लिखित धर्म विरोधी कथनोंके कारण हीनभावना सहन नहीं करनी पडे। इस दिशामें सभी विद्वानोंका यही मत है।

इस विश्वविद्यालयने स्नातकोंके अध्ययनके लिए जो विशेष निर्णय लिया है, अति उत्तम और प्रशंसनीय निर्णय है, जिससे सभी प्राचीन शास्त्र सम्मत परम्पराएं पुनः उजागर हो पाएंगी। इससे यह भी सभीको ज्ञान हो जाएगा कि सभी धर्मोंकी जननी सनातन संस्कृति ही है । देशके

दिग्गज प्रमुखोंको भी इसे प्रोत्साहित करनेके लिए आगे आना चाहिए। (१६.०१.२०२१)

****

केन्द्रीय मन्त्रीके कथनको असत्य सिद्ध करने हेतु रवीश कुमारद्वारा भ्रामक प्रचार करनेपर शासनने लगाई लताड

जब नूतन कृषिविधानोंके कारण किसान आन्दोलन अपने चरमपर है, ऐसे समयमें १४ जनवरी २०२१ को 'एनडीटीवी'के 'प्राइम टाइम' कार्यक्रममें रवीश कुमारने भारत शासनपर आरोप लगाया कि कृषि मन्त्रीद्वारा प्रस्तुत 'डेटा' झूठा है। कृषि मन्त्री पीयूष गोयलने ११ जनवरी २०२१ को कुछ कृषि सम्बन्धी आंकडे साझा करते हुए लिखा था कि १० जनवरी २०२१ तक भारत शासनने ५३४ लाख मेट्रिक टन धान क्रय किया है, जबकि पिछले वर्ष १० जनवरी २०२० तक ४२३ लाख मेट्रिक टन धान किसानोंसे क्रय किया गया था; अतः पिछले वर्षकी तुलनामें इस वर्ष किसानोंसे न्यूनतम समर्थन मूल्यपर क्रय किया गया धान २६% अधिक है। इस धान क्रयपर १ लाख करोड रुपये अधिक व्यय किए जानेसे ७१ लाख किसान लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने आगे लिखा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) किसानोंके हितमें यथावत रहेगा।

रवीश कुमारने केन्द्रीय कृषिमन्त्रीके कथनको असत्य बताते हुए कहा कि पिछले वर्ष कुल क्रय किया धान ५१९ लाख मेट्रिक टन था न कि ४२३ लाख मेट्रिक टन; अतः यह वृद्धि २६% नहीं है। उन्होंने कहा कि या तो भारत शासनसे आंकडोंमें चूक हुई है अथवा शासनद्वारा जानबूझकर झूठ कहा जा रहा है।

वास्तविकता यह थी कि कृषि मन्त्रीने १० जनवरी तकके आंकडे दिए थे; जबकि रवीश कुमारने पूरे वर्षके आकडे दिए थे । रवीश कुमारद्वारा प्रस्तुत सम्पूर्ण वर्षके आकडे १० जनवरी तकके क्रय किए आंकडोंसे अधिक तो होंगे ही ।

शासनने इस वक्तव्यका संज्ञान लेते हुए रवीश कुमारकी निन्दा की । 'एनडीटीवी'के इस कार्यक्रमको निम्नस्तरीय पत्रकारिता तथा तथ्योंकी अवहेलना करनेवाला घिनौना प्रदर्शन बताया । शासनद्वारा रवीशके विरुद्ध एक पत्र 'एनडीटीवी' आचार समितिको भेजा गया है । इसमें यह भी लिखा गया है कि कृषिमन्त्रीके 'ट्वीटको कार्यक्रममें काटकर प्रस्तुत किया गया है; जो यह दर्शाता है कि यह एक कुकृत्य था । पत्रमें लिखा है कि ऐसे संवेदनशील समयमें, जब किसान देहलीके निकट प्रदर्शन कर रहे हैं, ऐसे समय रवीश कुमारने किसानोंकी नकारात्मक भावनाओंको उकसानेका कार्य किया है ।

'एनडीटीवी'के रवीश कुमार सदैव मोदी शासनके विरोधमें घृणित वक्तव्य देते देखे जाते हैं । 'सीएए' विरोधी शाहीनबागके प्रदर्शनके समय भी यह शासन विरुद्ध वक्तव्य देते जनमानसको बरगलानेका कार्य कर रहे थे । शासनको ऐसे स्वार्थी, देशद्रोही तथा जनतामें उपद्रव फैलानेके प्रयास करनेवाले पत्रकारोंकी पत्रकारितापर तथा देशद्रोही वक्तव्य प्रसारित करनेवाली समाचार वाहिनियोंपर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए । (१६.०१.२०२१)

देहलीमें १३ वर्षीय बालकका लिंग परिवर्तन करवाकर होता रहा बलात्कार

देहलीकी गीता 'कॉलोनी'से एक ऐसी घटना सामने आई है, जिसने लोगोंको झकझोरकर रख दिया है । यहां कुछ लोगोंने मिलकर १३ वर्षके बच्चेका बलपूर्वक लिंग परिवर्तन करवाया और लम्बे समयतक उसके साथ सामूहिक बलात्कार करते रहे ! पुलिसको जानकारी तब हुई, जब पीडित बच्चा आरोपियोंके बन्धनसे किसी प्रकार मुक्त हुआ और एक व्यक्तिने उसकी सहायता की।

समाचारके अनुसार, बच्चेकी भेंट आरोपियोंसे लगभग ३ वर्ष पूर्व लक्ष्मी नगरमें एक 'डांस इवेंट'में हुई थी, वहां आरोपियोंने शुभमसे (परिवर्तित नाम) मित्रता की और नृत्य सिखानेका कहकर उसे मंडावली ले गए । मंडावलीमें कुछ समय रहकर शुभमने नृत्य कार्यक्रममें भाग लिया, जिसके लिए आरोपी उसे पैसे देते थे।

थोडे समय पश्चात आरोपी शुभमसे मंडावली रहनेका ही हठ करने लग गए । धीरे-धीरे वे लोग शुभमको मादक पदार्थ देने लगे और कुछ ही दिनोंमें उसका बलपूर्वक लिंग परिवर्तनके लिए शल्यचिकित्सा करवा दी। उस समय शुभमकी आयु १३ वर्ष थी। शुभमने पुलिसको बताया कि उसे चिकित्साके पश्चात 'हार्मोनल' औषधियां भी दी गईं, जिससे वो लडकी दिखने लगा।

शुभमका लिंग परिवर्तन करवानेके पश्चात आरोपियोंने मिलकर उसका सामूहिक बलात्कार किया और पैसेके बदले दूसरे लोगोंसे भी उसका बलात्कार करवाया । बलात्कारके पश्चात उसे किन्नर बनाकर स्टेशनपर उससे भीख भी

मंगवाई । शुभमने बताया कि अभियुक्त स्वयं भी महिलाओंके वस्त्र पहनकर देहव्यापार करते थे और आनेवाले ग्राहकोंको मार-पीटकर उनके पैसे छीन लेते थे ।

शुभम और उसका मित्र मार्च २०२० में 'लॉकडॉउन' लगनेके पश्चात किसी प्रकार आरोपियोंके बन्धनसे भाग निकले । इसके पश्चात शुभम अपने मित्रके साथ अपने घर पहुंचा, जहां शुभमकी मांने दोनोंको एक भाडेके घरमें रहनेका स्थान दिलवाया और वह स्वयं (माता-पिता) भी उनके साथ रहने लगे; परन्तु आरोपियोंकी दृष्टिसे दोनों पीडित अधिक दिनोंतक बच नहीं पाए ।

दिसम्बरमें आरोपियोंको शुभमके घरकी जानकारी हो गई । उन्होंने उसके घर पहुंचकर उसके साथ मारपीट की । उनके पैसे इत्यादि भी छीनकर उसे अपने साथ ले गए । इस मध्य शुभमकी मांको बन्दूक दिखाकर मौन रहनेकी धमकी भी दी गई । शुभमने बताया कि जानेके पश्चात चार लोगोंने पुनः उनके साथ दुष्कर्म किया !

यद्यपि, दो दिन पश्चात पुनः दोनों पीडित वहांसे भाग निकले और देहली रेलवे स्टेशन जाकर छुप गए । इस मध्य उन्हें एक ऐसा अधिवक्ता (वकील) मिला, जिसने दोनोंकी स्थिति देखकर उन्हें देहली महिला आयोगके कार्यालय ले गया, जहांसे उन्हें बचा लिया गया ।

क्रूरताकी सीमाको पार करता यह अत्याचार हमारे समाजके सत्यको दिखाता है कि हम किस सीमातक निकृष्ट हो चुके हैं । लिंग परिवर्तन करनेवाला कोई चिकित्सक ही होगा और बन्दूक भी बिना 'लाइसेंस'की ही होगी, तो इन अपराधियोंके दोनों कार्य ही भ्रष्ट माध्यमकेद्वारा सिद्ध हो गए

और बालकको पुनः ले जाना और मांका मौन रहना दिखाता है कि उन्हें वैधानिक व्यवस्थामें विश्वास ही नहीं है और होगा भी क्यों ? पुलिस आदिकी स्थिति तो किसीसे छुपी नहीं है । इस नरकमें जाते समाजको रोकना अब अत्यन्त आवश्यक है, इसके लिए धर्म आधारित शिक्षा आवश्यक है ।

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है । यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा । इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं । यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें ।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है ।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं । इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें । कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें ।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. साधकके गुण, १९ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नामजप कब, कहां और कितना करें ? २३ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. क्या टैटू करवाना चाहिए ? २७ जनवरी, रात्रि ७.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है । इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे,

कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915